Sanskritization

Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part II (Hons)

दक्षिण भारत के कुर्ग लोगों के सामाजिक व धार्मिक जीवन के विश्लेषण में डॉ० श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण शब्द का सर्वप्रथम काम में लिया। एक अवधारणा के रूप में इसका प्रयोग परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना व सांस्कृतिक गतिशीलता की प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए किया गया। मैसूर के कुर्ग लोगों का अध्ययन करते समय डॉ० श्रीनिवास ने पाया कि निम्न जातियों के लोग ब्राह्मणों की कुछ प्रथाओं को अपनाने तथा अपनी स्वयं की कुछ प्रथाओं, जैसे मांस खाने शराब का प्रयोग एवं पशु बलि, आदि छोड़ने में लगे हुए थे। इनके ऐसा करने का उद्देश्य जातीय संस्तरण की प्रणाली में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाना था। वे ब्राह्मणों की भोजन संबंधी आदतों, उनकी वेश-भूषा तथा कर्मकाण्डों को अपनाकर अपनी स्थिति को ऊँचा उठाने का प्रयत्न कर रहे थे। वे ब्राह्मणों की जीवन पद्धति का अनुकरण करके संस्तरण की प्रणाली में एक दो पीढ़ी में उच्च स्थिति की माँग प्रस्तुत करना चाहते थे। गतिशीलता की इस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए श्रीनिवास ने प्रारंभ में ब्राह्मणीकरण शब्द का प्रयोग किया लेकिन बाद में इसके स्थान पर इन्डोन संस्कृतिकरण नामक शब्द का प्रयोग किया।

Meaning of Sanskritization

डॉ० श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक Religion and society among the Coorgs of South India में जाति की प्रक्रिया को स्पष्ट करने हेतु संस्कृतिकरण के प्रत्यय का प्रयोग किया। उन्होंने लिखा है कि जाति प्रथा उस कठोर प्रणाली से काफी दूर है जिसमें प्रत्येक स्थानक जाति की स्थिति हमेशा के लिए

Scanned with CamScanner

निश्चित कर दी जाति जाती है। जाति प्रथा में गतिशीलता सदैव संभव रही है और विशेषतः मध्य जातियों में। श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण को प्रारंभ में इस प्रकार से परिभाषित किया, "एक निम्न जाति एक या दो पीढ़ियों में शाकाहारी बनकर, मद्यपान को छोड़कर तथा अपने कर्मकाण्ड एवं देवगण का संस्कृतिकरण कर संस्तरण की प्रणाली में अपनी स्थिति ऊँची उठाने में सक्षम हो जाती है। संक्षेप में, वह जहाँ तक संभव है, ब्राह्मणों की प्रथाओं, अनुष्ठानों एवं विश्वासों को अपना लेती है। साधारणतया निम्न जातियों के द्वारा ब्राह्मणी जीवन प्रणाली को प्रायः अपना लिया जाता है यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से यह वर्जित था।"

प्रो० श्रीनिवास ने अपनी इस परिभाषा में बाद में चलकर संशोधन किया और इसे पुनः परिभाषित करते हुए लिखा, "संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा कोई अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और पद्धति को बदलता है। सामान्यतः ऐसे परिवर्तनों के बाद निम्न जाति, जातीय संस्तरण की प्रणाली में, स्थानीय समुदाय में उसे परम्परागत रूप से जो स्थिति प्राप्त है उससे उच्च स्थिति का दावा करने लगती है। सामान्यतः बहुत दिनों तक बल्कि वास्तव में एक दो पीढ़ियों तक दावा किये जाने के बाद ही उसे स्वीकृति मिलती है।

Sanskritization is the Process by which a low hindu caste or a tribe or other group changes its customs, ritual, ideology and way of life and in the direction of a high and frequently twice born caste. Generally such changes are followed by a claim to a higher Position in the caste hierarchy than that traditionally conceded to th

Scanned with CamScanner

claimant caste by the local community."

[M.N. Srinivas, Social Change in Modern India]

डॉ. योगेन्द्र सिंह ने संस्कृतिकरण की अवधारणा पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस अवधारणा के दो पक्ष हैं - ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक। ऐतिहासिक संदर्भ में भारतीय समाज के इतिहास में संस्कृतीकरण सामाजिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया रही है तथा संरचनात्मक अर्थ में सापेक्षिक भाव में (in relative terms) संस्कृतिकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner